VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 26 AUG 2022 No. 3
RECEIVED

SUBJECT:		Test Code:	2	1	2	2
Name of Candidate	Ishwar lal Gurjar					

Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1	2	9	5	8	18
Center	Delhi 26 Aug, 2022	Date	2	6	0	8	2	2

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम मे लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यदि आप शांति चाहते हैं, तो युद्ध के लिए तैयार रहें!

धृतराष्ट्र की राजसभा में 'कृष्ण' शांतिदूत बनकर आए; कौरवों और पांडवों को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए उन्होंने 'दुर्योधन' से पाण्डवों के लिए सम्पूर्ण कुरुक्षेत्र राज्य के केवल पांच गाँव मांगते हुए अपना सन्देश कहा -

"दो न्याय अगर, तो न आधा दो
पर उसमे भी यदि बाधा हो।
दे दो केवल पाँच ग्राम,
रखो अपनी धरती तमाम
हम वहीं खुशी से खायेंगे
परिजन पर असि न उठायेंगे"

लेकिन युद्ध की मानसिकता से ग्रस्त कौरव ज्येष्ठ दुर्योधन वह भी दे न सका। अन्ततः युद्ध को किसी भी स्थिति में टाला

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ना जा सका और अन्याय पर न्याय की, अधर्म पर धर्म की स्थापना के लिए युद्ध की अनिवार्यता को स्वयं कृष्ण ने स्वीकार किया। लेकिन उससे हुआ क्या? क्या युद्ध ने शांति सदा के लिए स्थापित कर दी ?

प्रश्न केवल युद्ध की अनिवार्यता का ही नहीं है; युद्ध के औचित्य का भी है। यही दुविधा महाभारत के भीष्म पर्व में 'धर्मराज युधिष्ठिर' को भी है। युद्ध के अठारवे दिन विजय पश्चात् मृतकों से अटी पड़ी युद्ध भूमि को देखकर युधिष्ठिर सोच रहे हैं कि -

"वृथा महाभारत का रण हुआ
पाँच ही असहिष्णु नरों के द्वेष से
हो गया संहार पूरे देश का"

युधिष्ठिर के इस प्रश्न का जवाब शरसैया पर लेटे हुए पितामह भीष्म उत्तर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

देते हैं; और युद्ध का औचित्य स्थापित करते हुए कहते हैं कि-

"छीनता हो न्याय को, रण को भी बुलाता नहीं है
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।

छिनता हो स्वत्व कोई
और तू त्याग तप से काम ले, यह पाप है
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे,
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के काव्य - 'कुरुक्षेत्र' की यह पंक्तियां हमारे युग के युद्ध-दर्शन को उजागर करती है। युद्ध अपने आप में काम्य नहीं है लेकिन जब शत्रु द्वार पर ही आ गया हो; जब संकट व्यक्ति, राष्ट्र और मातृभूमि के अस्तित्व पर हो तब युद्ध मनुष्य का 'आपद धर्म' बन जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

युद्ध को लेकर यही दृष्टिकोण पश्चिमी चिंतन में नीत्शे, हीगल और मार्क्स का भी है।

इतिहास और वर्तमान दोनों ही इस बात के गवाह है कि शांति की रक्षा वही कर सकता है जो स्वयं शक्तिशाली और आत्मनिर्भर हो। संकट में स्वयं का अर्जित भुजबल और शस्त्रबल ही काम आता है।

यदि हम इतिहास में नज़र दौड़ाए तो हम पाते है कि दुर्बल राष्ट्रों व सभ्यताओं को या तो दिग्विजयी शासकों ने अपने पैरों तले रौंद दिया या उन्हें परतंत्रता की बेड़ियों में ~~जकड़~~ जकड़ लिया गया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मिस्र और नील नदी की सभ्यताएं हो या एथेंस और स्पार्टन जैसे राजवंश, युद्ध नीति को त्यागकर धम्म नीति अपनाने वाले मौर्य शासक हो या अमेरिकी महाद्वीपों के मूल निवासी, आदिवासी कबीले सब या तो आतातायियों के शिकार हुए या महत्वकांक्षी योद्धाओं का।

वर्तमान में यूक्रेन-रूस का संघर्ष शांति के लिए युद्ध के लिए तैयार रहने की अनिवार्यता को सही साबित करता है। सोवियत संघ के विघटन के समय स्वतंत्र हुए यूक्रेन के पास परमाणु हथियार थे। लेकिन 1994 की रूस के साथ संधि में यूक्रेन ने अपने परमाणु हथियार और संयत्र रूस को इस शर्त पर सौंप

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दिए कि भविष्य में रूस यूक्रेन की संकट के समय सहायता करेगा। आज कहना न होगा कि रूस जो रक्षक था वही शक्ति के अभाव में निर्बल यूक्रेन का भक्षक बन गया और क्रिमिया सहित आधे यूक्रेन पर कब्ज़ा कर लिया।

आजादी के बाद भारत ने चीन को 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे के साथ गले लगाया लेकिन इसी चीन ने भारत की दुर्बलता का फायदा उठाकर 1962 ई. में भारत पर युद्ध थोप दिया। यदि उस समय तक भारत परमाणु सम्पन्न या अपनी सुरक्षा के प्रति सचेत होता तो चीन ऐसा दुस्साहस नहीं कर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सकता था। इसीलिए दिनकर की यह पंक्तियों सही जान पड़ती है कि-

"क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन, विनीत सरल हो"

सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि यदि शांति के लिए युद्ध की तैयारी जरूरी है तो फिर वह शांति नहीं है मात्र कुछ समय के लिए युद्ध की अनुपस्थिति है। अमेरिका में एक प्रसिद्ध कहावत है कि जो गोली बनी है वह चलेगी भी जरूर।

युद्ध का विरोध करने वाले विचारकों का मानना है कि ऐसा कोई युद्ध नहीं हुआ; जो सारे युद्धों को समाप्त कर दे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत में महात्मा गांधी, बुद्ध, महावीर और पश्चिम में इलियट, सार्त्र जैसे विचारकों ने युद्ध से शांति की स्थापना के प्रयासों को मृगतृष्णा बताया है।

गाँधी जी के अनुसार हिंसा से कभी भी स्थाई बदलाव नहीं लाये जा सकते है। हिंसा जब भी कुछ अच्छा करते दिखती है तो वह अस्थाई होता है और जब वह बुरा करती है तो स्थाई हो जाता है। गाँधी जी का मानना है कि सही शांति व्यक्ति के अंतःकरण को बदलकर ही स्थापित हो सकती है।

'नेल्सन मंडेला' भी कहते है कि - "बाहर तब तक शांति नहीं हो सकती जब तक कि मनुष्य के भीतर शांति नहीं है।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इतिहास में जाने कितने ही बेचैन, आत्ममुग्ध तानाशाहों और शासकों ने अपने अहम् की पूर्ति के लिए मानवता पर युद्ध थोपे है। 'अशोक' द्वारा धम्म अपनाने से पहले कलिंग युद्ध में निर्बलों का संहार हो या अलाउद्दीन और औरंगजेब जैसे सुल्तान के साम्राज्य विस्तार के लिए रक्तरंजित लड़ाइयाँ, इसी बात के प्रमाण है कि युद्ध हमेशा शांति और न्याय के लिए नहीं लड़े जाते है।

प्रथम विश्व से पहले सम्पूर्ण यूरोप अविश्वास और गठबंधी के कारण युद्ध के लिए तैयार बैठा था। एक छोटी सी चिंगारी ने उन युद्ध तत्पर देशों को एक महायुद्ध की परिणति तक

पहुँचा दिया।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या शांति के लिए युद्ध के लिए तैयार रहना ही जरूरी है या हमे और भी कुछ करना होगा?

जब युद्ध व्यक्तिगत स्वार्थों एंव तानाशाहों के हितों की बजाय देश की स्वतंत्रता और सामूहिक अन्याय के ~~लिए~~ प्रतिकार के लिए हो तब वह एक कड़वी दवा के रूप में जरूरी हो जाता है। लेकिन शांति के लिए केवल युद्ध की तैयारी या आत्मरक्षा के लिए बारूद इकट्ठा करना ही नहीं है। इसके अतिरिक्त युद्ध के असली कारणों की पहचान और स्थाई शांति के समाधान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की भी जरूरत है।

एक राष्ट्र के रूप में भारत को अपनी रक्षा प्रणाली का आधुनिकीकरण एवं आत्मनिर्भरता के प्रयास करने चाहिए साथ ही बदलती परिस्थितियों में स्पेस वॉर, साइबर वॉर, करेंसी वॉर एवं ट्रेडवॉर जैसी गैर-परम्परागत युद्ध नीतियों के प्रति सजग रहना चाहिए लेकिन इन सब के अतिरिक्त स्थाई शांति के लिए अन्य समाधान भी समय की मांग है।

शांति की स्थापना तब तक संभव नहीं होगी जब तक पाण्डवों का हिस्सा कौरवों द्वारा हड़पा जाता रहेगा। श्रीलंका और अफ्रीका के गृहयुद्ध हो या मध्य एशियाई देशों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में उग्रवाद, आंतकवाद इन सब के मूल में वंचना और अन्याय की भावना है। इस वंचना की समाप्ति के लिए जरूरी है कि राष्ट्रों के स्तर पर विविधता का पोषण हो, सहिष्णुता और समन्वय को बढ़ावा मिले और वैश्विक स्तर पर 'नियम' और 'न्याय आधारित' व्यवस्था कायम हो।

परमाणु हथियारों और अन्य युद्ध बारूदों के ढेर पर बैठी दुनिया निशस्त्रीकरण, अपरमाणुवाद को बढ़ावा दिए बिना शांति की केवल बातें कर सकती है, वास्तविक शांति नहीं स्थापित कर सकती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी तरह गरीबी, असमानता, नस्लवाद, शोषण और धार्मिक उन्माद को रोके बिना वास्तविक शांति स्थापित नहीं हो सकती। युद्ध की तैयारी से अधिक जोर जलवायु परिवर्तन शमन, शरणार्थी समस्या और वैश्विक आतंकवाद को रोकने में देना होगा।

राजनीति में तानाशाही (उत्तरी कोरिया) सैन्य तख्तापलट (म्यांमार) और नस्लवाद जारी रहेगा तब तक मानवता पर युद्ध थोपे जाते रहेंगे इसलिए लोकतंत्र और सहभागी तंत्र की मजबूती भी शांति की पूर्व शर्त है।

अतः समग्र रूप से कहा जाए तो युद्ध की तैयारी स्वयं की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रक्षा एंव निर्बल के उद्धार के लिए हो न कि प्रतिष्ठा के नाम पर। भारतीय विदेश नीति के ध्येय वाक्य - जीओ और जीने दो। तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रसार की जरुरत है।

'वार एंड पीस' के लेखक 'लियो टॉलसटॉय' ने जैसा कि कहा है कि 'युद्ध मानवता को छोटा कर देता है।' इस सन्दर्भ में प्रासंगिक बन हो जाता है। अन्त में 'डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम' के इस विचार के साथ बात को समाप्त करना उचित होगा कि - "जब मन में सुचिता होगी तब परिवार में समृद्ध होगी और राष्ट्र में समृद्धी होगी। जब राष्ट्र में समृद्धी होगी तब ही विश्व में शांति होगी"

——x——

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं है

नियति ने इतनी परीक्षा और किसकी ली होगी; जितनी 'राम' की ली। एक राजा का ज्येष्ठ पुत्र, अयोध्या के भावी सम्राट और गुरुओं का प्रिय 'राम' होने के बावजूद; वनवास मिला, लेकिन वहाँ भी जीवन-संघर्ष कम नहीं; पत्नी का हरण उस रावण ने कर लिया जिससे तीनों लोक पराजित है; राम अकेले और वनवासियों की अनुभवहीन सैना लेकर अपने युग की सबसे बड़ी ताकत से भीड़ गए और अन्ततः जो अयोध्या से दशरथ पुत्र राम निकले वह 'मर्यादा पुरुषोत्तम' बनकर भारतीय चेतना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में स्थापित हो गए। यह केवल 'राम' की पौराणिक मिथकीय कहानी मात्र नहीं बल्कि हर उस 'कर्मवीर' की कहानी है जो एक अनपरीक्षित जीवन को जीने योग्य नहीं समझता; जो संघर्ष और चुनौतियों से नहीं घबराता बल्कि और निखरकर सामने आता है। इसीलिए किसी कवि ने कहा भी है कि -

"वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या
जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धाराएँ ही प्रतिकूल ना हो।"

एक अनपरीक्षित जीवन अकर्मण्य और निष्क्रियता का जीवन है। परीक्षित जीवन वही है जिसने इस संसार में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कर्मरत रहकर स्वयं का शोधन किया हो ; जिसने अपना आत्मशोध किया हो।

'महात्मा बुद्ध' का जीवन इस का जीवंत उदाहरण है। गौतम के पिता शाक्य कुल के मुखिया थे। राज-ठाट और वैभव की कमी न थी। 'गौतम' को जीवन के सारे 'ऐशो-आराम', सुख-सुविधाएं प्रदान की गई लेकिन 'गौतम' को ~~था कि~~ यह अनपरीक्षित जीवन मंजूर न था। उन्होंने जीवन के सत्य की तलाश में, सार्थकता की खोज में 29 वर्ष की उम्र में राजवैभव और परिवार का मोह छोड़-स्वयं का परीक्षण करने जंगल में चले गए। वनों में घुम-घुम और दुनियावी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

साधनों को आज़माने के बाद भी उन्हें निर्वाण का ज्ञान नहीं मिला। वह ज्ञान मिला आत्मशोध में और वह भगवान बुद्ध कहलाए।

महात्मा गांधी का जीवन भी अपने परीक्षित जीवन की तलाश ही है। गांधी ने अपनी आत्म कथा - 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में लिखा भी है कि उनका सम्पूर्ण जीवन सत्य की खोज का प्रयास मात्र है।

ऐसे में हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि परीक्षित जीवन क्या होता है? और क्यों एक अनपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं है?

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

गांधी जी के अनुसार - "किसी मूल्य, सिद्धान्त या चीज में भरोसा करना और उसे न जीना बेईमानी है।"

ऐसा ही युनानी दार्शनिक - सुकरात का भी मानना है कि 'ज्ञान' ही सर्वोच्च सद्गुण है और ज्ञानी व्यक्ति कभी अनैतिक कार्य नहीं करेगा लेकिन यह ज्ञान तथ्यात्मक न होकर सात्विक अनुभवजन्य होना चाहिए अर्थात अपने जीवन के परीक्षण द्वारा अर्जित हो।

ध्यातव्य हो कि स्वयं का परीक्षण करना इतना आसान कार्य नहीं होता। अपनी आत्मा में पारदर्शिता से झाँकना बेहद मुश्किल होता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कथनी और करनी का अंतर मिटा देना ही परीक्षित जीवन का सर्वोच्च लक्षण है। उसी सत्य को जीव जीना जिसमे आपका भरोसा हो। लेकिन अधिकांश लोग स्वयं के परीक्षण से इतर दूसरों में परीक्षण चाहते है। गालिब का एक शेर है कि "जिन्दगी भर गालिब यही भूल करता रहा धूल चेहरे पर थी, मैं आईना साफ करता रहा"

जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में हम परीक्षित जीवन जीने वालों को देख सकते है।

राजनीति में अब्राहम लिंकन और नेलसन मंडेला का जीवन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसके उदाहरण है जिन्होंने अपने जीवन की सार्थकता अपने देश के शोषित वर्ग के उत्थान में देखी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन अपने ज्ञान और अनुभव द्वारा अपने वर्ग और राष्ट्र का उद्धार करने में गुजरा। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक रहे भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस, तिलक और चन्द्रशेखर आजाद जैसे स्वतंत्रता सैनानियों का जीवन राष्ट्र को परतंत्रता से मुक्त कराने के प्रयासों में सफल रहा।

सामाजिक क्षेत्र में मार्टिन लूथर किंग, मदर टेरेसा, ज्योतिबा फूले

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'ईश्वरचन्द्र विद्यासागर' और राजा राम मोहन राय का जीवन सामाजिक सुधारों के लिए समर्पित रहा।

हमारे दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि लोग नियति के पूर्ण विरोधों के बावजूद अपने समर्पण और उच्च मूल्यों के कारण एक परीक्षित जीवन जीते है। 'हरकेला हजब्बा' द्वारा अपनी सम्पूर्ण जीवन की जमा पूंजी द्वारा एक स्कूल का निर्माण करना हो या फिर covid-19 के दौरान अजीम प्रेमजी द्वारा रोज 22 करोड़ रूपये की सहायता गरीबों को देना हो यह सब एक परिपूर्ण जीवन की निशानियां है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मणिपुर के पहाड़ों से आने वाली एक चायबेचने वाली माँ की लड़की 'मीराबाई चानु' ने ओलम्पिक में रजत पदक जीतने के बाद उन ट्रक ड्राइवरों को बुलाकर अपने घर पर उन्हें दावत दी और ट्रेनिंग के दौरान मदद के लिए धन्यवाद देना एक परीक्षित जीवन का उदाहरण है।

'अनपरीक्षित जीवन' एक अपूर्ण जीवन है। यह लकीरें पर चलने वालों और अपने अभावों को नियति मानकर बैठे रहने वालों का जीवन है; यह उनका जीवन नहीं है जिसके बारे में 'दिनकर'

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ने लिखा है कि-

'हम ठोक: ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़"

यदि 'दशरथ मांझी' जैसा मजदूर एक छेनी हथौड़े के सहारे अपने हौसले से 360 फीट लम्बा पहाड़ काट पाए और 'दैतारी नायक' अकेले 3 Km लम्बी नहर खोद पाए तो यह कहना सही होगा कि मनुष्य "अपनी नियति का भोक्ता नहीं कर्ता है। वह अपनी भाग्य रेखाऐं बदल भी सकता है और पुन: रच भी सकता है।"

'बेंजामिन फ्रेंकलिन' अपनी आत्मकथा में लिखते भी है कि -

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"जो स्वयं को जानने का प्रयास नहीं करता, जो यात्राएँ नहीं करता और जो जीवन से दो-दो हाथ नहीं करता; वह जीवन रूपी किताब का केवल एक पृष्ठ ही पढ़ पाता है"

'अनपरीक्षित जीवन' जीना परमुखापेक्षी, दूसरों पर आश्रित होना है। ~~ऐसे~~ ऐसा जीवन समाज के लिए परिसम्पत्ति न हो कर बोझ है।

लोक सेवा के सन्दर्भ में देखे तो हम पाते है कि जो लोकसेवक अपनी नौकरी को केवल 9 से 5 बजे तक ही समझते है तथा समाज सेवा की बजाय आत्म-सेवा में रत रहते है वह शासन के लिए

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किसी काम के नहीं होते है। इसकी और जिनमे सेवा का समर्पण होता है वह लाखो लोगो की जिन्दगी बदल देते है।

मणिपुर के IAS अधिकारी 'आर्मस्ट्रांग पोम' ने जनसहयोग से 100 करोड रुपये जुटा कर 30 Km सड़क का निर्माण किया। इस पीपुल्स रोड के कारण लाखो लोगो के जीवन मे बेहतरी आयी है। ऐसे ही लोगो की फहरिशता मे वर्गीज कुरियन, स्वामीनाथन, डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम शामिल है जिन्होंने अपने जीवन से लाखों नई जिन्दगियों को प्रेरणा दी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वर्तमान में बढ़ता उपोभ्तावाद और व्यक्तिवाद मनुष्य को संकीर्ण और स्वार्थी बनाता जा रहा है निदा फाजली ने आजके इसी अन-परीक्षित मनुष्य के लिए कहा है कि-

"हर आदमी में होते है दस बीस आदमी
जिसको भी देखना, कई बार देखना"

ऐसे में जरूरी है कि जीवन की सार्थकता की खोज हम एक बार फिर करे। राजनीति और बाजार की विकृत भाषा और समाज की संवादहीनता से परे हम स्वयं को एकबार पुन: शोधे, परिष्कार करे।

'एरिक फ्रॉम' अपनी पुस्तक-
'टू हैव टू बी' में जीवन की
सार्थकता परस्पर निर्भरता और वर्तमान
से ईमानदार रहते हुए जीने को बताते
है। अनपरीक्षित जीवन जीने की बजाय
हम स्वयं को नई चुनौतियों और
बड़ी महत्वकांक्षाओं के लिए तैयार करे।
अपने अन्तःकरण का साक्षात्कार करे।
तब ही हम जन कल्याण से जगकल्याण
की ओर बढ़ पायेंगे।

अन्त में अपनी बात को
'बाबा फरीद' की इन गीत-पंक्तियों के
माध्यम से समाप्त करना चाहूंगा -

उठ फरीदा सुत्तिया तू, दुनिया वेखण जा
जो मिल जाये बख्शिया, तो तू वी बख्शिया जा
दुरिया दुरिया जा फरीदा दुरिया दुरिया जा।

* युद्ध तैयार न रहनेवालों की दुर्गति – यूक्रेन, ताइवान, कंबोडिया, भारत

* युद्ध के लिए तत्पर – इजराइल, रूस, म्यांमार, अमेरिका

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रफ – इसरायल – गांधी, बुद्ध, ध्यान से सुनो, इतिहास – अशोक

यदि आप शांति चाहते हैं, तो युद्ध के लिए तैयार रहो।

शांति क्यों – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र – स्वार्थी – परमार्थी – स्वयं का हित

शांति क्यों (युद्ध, आर्मी):
- स्पेस वॉर – दूसरों को हानि
- साइबर वॉर – प्रतिष्ठा के लिए → हिटलर
- ट्रेड वॉर – अत्याचार – हिटलर
- केमिकल वॉर – विकृत धर्म – धर्मयुद्ध
- ISRO – DRDO – eg. अशोक
- भारत – पाक, भारत – चीन

युद्ध परस्पर – चाणक्य — युद्ध बिना भी शांति

eg. भारत – चीन, नीतियाँ, हिमालय, परमाणु हथियारों (सांस्कृतिक)

eg. मनुज, मनुज का सुख भाग

eg. कृष्ण ने अन्याय

eg. सुनाता जो न्याय को युद्ध को भी बुलाता वही है, अधिकार खोकर रहना भी अन्वेषण पातक नहीं है।

eg. क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है, उसे क्या जो दंतहीन, विषरहित विनम्र सरल है।

eg. छीनता हो स्वत्व कोई, और तू त्याग तप से काम ले, पुण्य है विच्छिन्न कर देना, उसे बढ़ रहा तेरी तरफ जो।

eg. ध्यान से सुनो! कोई युद्ध सब युद्धों का अंत नहीं कर सकता

(Margin notes: निष्कर्ष – हमेशा नहीं; व्यावहारिक नहीं – हिटलर, मुसो, अशोक; सांस्कृतिक – परमाणु निरस्त्रीकरण – सर्वे भवन्तु – जन – जगत – जीओ और जीने दो – युद्ध लड़ना ही है – गरीबी, असमानता, बुराई; पौराणिक – कृष्ण – है तो केवल पीस ग्रीम; राम – रावण का संघर्ष; खेल – क्रिकेट; मन से – त्याग, सँवारो; आर्थिक – गरीबी, असमानता, समरसता, संकट; वार एंड पीस – विजय स्मर अखिल शीतकार)

eg. यदा यदा ही धर्मस्य – ग्लानिर्भवति – अंधा युग (तकनीक)

eg. समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध ...